International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 82-87

शांति शिक्षा का पाठयक्रम में एकीकरण

डॉ. राखी गिरीराज धिंग्रा
अनुसन्धानकर्ता, शिक्षा शास्त्र विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय, महाराष्ट्र, भारत।

सारांश
शांति शिक्षा को वर्तमान में शांति शिक्षा को व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा वैष्विक रूप से अपनाने की जरूरत आन पडी है। इन सभी क्षेत्रों में शांति को सम्मिलीत करना अति–आवश्यक हो गया है कारण इन सब का प्रत्यक्ष रूप से मानव जीवन पर हो रहा है। जिस हेतू अनुसंधानकर्ता के अनुसार शिक्षा के माध्यम से शांति शिक्षा को शिक्षा में एकीकरण करने से कई प्रकार की समस्याओं को आसानी से हल किया जा सकता है। जैसे विद्यार्थी में बढती हिंसा, अनुशासन की कमी, तनाव, आत्महत्या जैसी गंभीर समस्या को अधिक आसानी से हल किया जा सकता है। जिस हेतु शिक्षा में शांति शिक्षा को प्रमुख 6 तरीकों से आत्मसाद अर्थात एकीकरण करने से इसके नतीजे अधिक समारात्मक हो सकते है। विद्यार्थीयों को शांति शिक्षा हेतु आवश्यक ज्ञान के प्रति जागरूक कर उस ज्ञान को व्यवहार में ढालने हेतू आवश्यक कौशलों का भी प्रशिक्षण दें उनमें समारात्मक बदल लाया जा सकता है। शांति शिक्षा यह कभी ना खत्म होने वाली प्रक्रिया है जिसे विद्यार्थीयों को शिक्षा के माध्यम से अधिक बेहतर तरीकों से दिया जा सकता है कारण शांति शिक्षा यह मानवता की शिक्षा देने वाली शिक्षा है। शांतमय जीवन जीने वाले व्यक्ति का निर्माण करना" ही शांति शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य है। इस हेतु शांति शिक्षा को पाठयक्रम में 6 प्रमुख माध्यम के द्वारा आसानी से जोड़ा जा सकता हैं। प्रस्तुत लेख में शांति शिक्षा को किस प्रकार से पाठयक्रम में आसानी से जोड़ा जा सकता हैं इसे स्पष्ट किया गया हैं तथा शांति शिक्षा को किस प्रकार से पाठयक्रम में सम्मिलित किया जाना चाहिए इसपर सविस्तर से चर्चा की गई है।

मूल शब्द : शांति शिक्षा

प्रस्तावना
शांति शिक्षा की आज सब से ज्यादा जरूरत देश के युवा वर्ग के लोगों को है। जिनको दिमाग काफी उत्तेजित और अधिक संवेदनशील हैं। युवा वर्ग के लोगो को हैं। जिनका दिमाग काफी उत्तेजित और अधिक संवेदनशील हैं। युवा वर्ग यह देश का भावी नागरीक हैं। जिस कारण उसकी संवेदनशीलता और अति उत्तेजना का सही उपयोग किया जाना अधिक जरूरी हैं, नहीं तो वे जल्दी ही गलत रास्ता अपनाने लगते हैं। इन सब से बचने हेतु सही समय पर ही उनके दिमाग में शांति के बीज को बोया जाना चाहिए। जिससे वे सही समय पर ही वे शांति के महत्व को समझ कर अपने जीवन में उसका उपयोग करना सीख कर अपने व्यवहार और दृष्टिकोण में बदलाव ला सकें। वर्तमान समय में इसकी सबसे ज्यादा जरूरत महसुस की जा ही हैं। कारण आज हर दिन अशांति से संबंधित कई घटनाओं के बारें में हम पढ़ते ही रहते हैं। अगर इन सब में बदलाव लाना हैं तो इसकी शुरूवात सर्वप्रथम स्कुल तथा स्कुल के पाठयक्रम में कुछ बदलाव लाकर आसानी से की जा सकती हैं। इस हेतु शांति शिक्षा को पाठयक्रम में 6 प्रमुख माध्यम के द्वारा आसानी से जोड़ा जा सकता हैं। जो कि निम्नलिखित हैः–

शांति शिक्षा को पाठयक्रम में एकीकरण करने के 6 प्रमुख माध्यम (Integrating peace education in the curriculum - 6 major media of integration)
अ. विषय संदर्भ (Subject context)
ब. अध्यापन पध्दतियॉ (Teaching Methods)
क. पाठयक्रम सहभागी कियाऍं (Co-curriular Activities)
ड. कर्मचारियों का विकास (Staff Development)
च. कक्षा नियोजन (Classroom Management)
छ. स्कुल नियोजन (School Management)

अ. विषय संदर्भ (Subject context)
शांति कक्षा कार्यक्रम को कक्षा में स्वयं के लिए उपयोग हेतु प्रयोग किया जाना चाहिए। शांति कक्षा को पाठयक्रम में इस तरह से रखा जाना चाहिए, जिससे वह अलग विषय के रूप में नजर न आकर सभी विषय में वह निहित हैं, ऐसा महसुस होना चाहिए। शांति कक्षा को वर्तमान पाठयक्रम के अनुसार ही पढ़ाया जाना चाहिए। मगर इसे पढ़ाने की विधी, शांति से संबंधित कार्यक्रमों तथा नवीन विषयों के माध्यम से समझाना जाना चाहिए। शांति कक्षा को विद्यार्थियो की कक्षा, उम्र और शिक्षा के हिसाब से ही समझाया जाना चाहिए। प्रत्येक विषय के माध्यम से शांति कक्षा की संकल्पना को विद्यार्थियो के दिमाग और दृष्टिकोण दोनो में बदलाव लाने तथा विश्व मूल्यों को आत्मसाद करने हेतु प्रयोग किया जाना चाहिए। शांति कक्षा को निम्नलिखित विषयों के माध्यम से आसानी से आत्मसाद करवाया जा सकता हैं।

अ. 1. भाषा (संदहनंहम) : भाषा का सबसे प्रमुख कार्य व्यक्ति को विश्व में शांति का एहसास कराना हैं। कक्षा में विद्यार्थियो को भाषा के माध्यम से ही आपसी समस्याओं को सुलझाना, मूल्यों को आत्मसाद करना तथा कक्षा में होने वाली विविध प्रकार की गतिविधियों को समझने का मौका मिलता है। जिससे विद्यार्थियो में भाषा कौशल, गंभीर विचार चिंतन कौशल तथा सामाजिक एकीकरण करने के कौशलों का अभ्यास करने का भी मौका प्रदान होता हैं। शांति शिक्षा को भाषा के माध्यम से एकीकरण करने से सांस्कृतिक एकता को बढ़ावा मिलता हैं। किसी भी प्रकार की सूचना देने का कार्य भी अधिक प्रभावशाली होता हैं तथा कई गंभीर समस्याओं का

शांति की भाषा से आसानी से समझाया जा सकता हैं इसे निम्नलिखित रूप से समझा जा सकता हैं

- **पड़ना और लिखना :–** पडना और लिखना दोंनो ही भाषा को एक अलग महत्व प्रदान करते हैं। जिसके माध्यम से आपसी समझ को आसानी से विकसित किया जा सकता हैं।
- **बोलना और सुनना :–** बोलना और सुनना आपसी वार्तालाप को मजबूत बनाने का एक सक्षम माध्यम हैं। इसके माध्यम से स्वयं के ज्ञान में बड़ोत्तरी तथा समाज में एक अलग पहचान बनायी जाती हैं। शांति कक्षा के द्वारा सहयोग एक साथ सीखना तथा अच्छी भाषा को सीखने में मदद मिलती हैं।
- **शांति से संबंधित शब्दों का रोज अभ्यास :–** शांति से संबंधित शब्दों तथा परिभाषाओं का रोज अभ्यास कराना चाहिए तथा शांति से संबंधित कार्य भी हफ्ते में करने देने चाहिए।
- **मानव अधिकार की जानकारी :–** मानव अधिकार से जुड़ी कई बातों की जानकारी विद्यार्थियों को दी जानी चाहिए जैसे–जिम्मेदारी, न्याय, अधिकार, स्पष्टता, आवश्यक, लोकतंत्र, विचारों का आदान–प्रदान, गंभीर चिंतन आदि।
- **संचार कौशल :–** भाषा के माध्यम से संचार कौशल को बढ़ाया जा सकता है। आज विदेश जाना बहुत ही आसान हो गया हैं, पर वहॉ जाने से पहले हमें उस देश की भाषा आनी जरूरी हैं परंतु, अब अंतराष्ट्रीय भाषा अंग्रेजी को सभी देशों ने मान्य कर लिया हैं।
- **कथा लेखन तथा अभिनय :–** शिक्षक ने अपने विद्यार्थियों को कथा लेखन लिखने को कहना चाहिए तथा उस कथा, कहानी पर अभिनय करने को कहना चाहिए जिससे वे जीवन से जुड़ी समस्याओं से अवगत होकर उसे हल करना भी सीख जाते हैं।
- **वाद–विवाद :–** वाद–विवाद के माध्यम से विद्यार्थियों को वर्तमान परिस्थितियों पर चर्चा करने को कह कर उनके विचारों को जाना जा सकता हैं। जैसे :– न्युकलर शस्त्र, रक्षा विभाग से संबंधित साहित्य, युध्द, शांति आदि।
- **नाटक :–** विद्यार्थियो को युध्द के दुष्टपरिणाम व शांति के लाभ पर नाटक करने कहा जाना चाहिए। जिससे वे युध्द से होने वाली तथा शांति से मिनले वाले सुकून के बारें में जागरूक हो सकें।
- **समझौता :–** विद्यार्थियों को आपसी बहस होने पर शांति से समझौता करना सीखाने में शांति की भाषा को उपयोग करने से वह कमाल का असर दिखाता हैं। इससे वे बड़ी से बड़ी बातों को बड़े प्यार और शांति से हल कर सकते हैं।

उपरोक्त सभी बातों से शांति शिक्षा उपागम को अपनाले वाले विद्यार्थियों को निम्नलिखित फायदे होते हैं :–

- विद्यार्थी युध्द तथा शांति के बारें मे जागरूक होते हैं।
- विद्यार्थीयों मे समानुभूति के कौशलों का विकास होता हैं।
- विद्यार्थी व्यक्तिगत, सामाजिक तथा वैश्विक बातों से अवगत होते हैं।
- विद्यार्थीयों की व्यक्तिगत वृध्दि और विकास हेतु वे स्वयं जागरूक होते हैं।
- विद्यार्थी स्वयं की भावनाओं को समझने हैं तथा उन्हें दुसरों की भावनाओं को भी समझना सीख जाते हैं।
- विद्यार्थी शांति तथा न्याय के लिए स्वयं सहयोग करने हेतु प्रोत्साहित होते हैं।

अ. 2. गणित (डंजीमउंजपबे) :– गणित इस विषय द्वारा वैज्ञानिक तथा तंत्रज्ञान विकास से विकसित और प्रगतिशील दोनों ही देशों में शांति को स्थापित करने मदद करता हैं। यह बात अलग हैं कि, गणित से मानव के व्यवहार को नहीं समझाा जा सकता हैं, परंतु गणित से सबंधित मूल्य यह मानक में अधिक गहरे, प्रभावशाली गुणों के रूप में होते हैं और इसी का विकास गणित इस विषय के माध्यम से विद्यार्थियों मे करना स्कुल का प्रमुख कार्य हैं। गणित इस विषय के माध्यम से बहुत ही अच्छी तरह से विश्व की संपत्ती, आर्थिक विकास, जनसंख्या शैक्षणिक खर्चो तथा पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारियों का हिसाब रखा जा सकता हैं

शांति संकल्पना से गणित इस विषय से विद्यार्थियों को निम्नलिखित फायदे होते हैं :–

- जब हम नक्शा, चार्ट या फिर इसी प्रकार की कोई बात विद्यार्थियों को समझाते हैं, तो वे सीखने के साथ ही अपने देश का दुसरे देश से संबंध को भी समझते हैं।
- विद्यार्थी बजट मे माध्यम से देश व विदेश दोनों की आर्थिक परिस्थिती के प्रति जागरूक होते हैं।
- इससे विद्यार्थियों में समस्या को हल करने की कौशल का विकास होता हैं।
- विद्यार्थी गणित और संस्कृति को समझने लगते हैं।
- पर्यावरण के प्रति गंभीर सोच का निर्माण होता हैं।

अ. 3. विज्ञान (Science) :– शांति को सीखान के लिए किसी खास प्रकार की ट्रेनिंग या अध्यापन पध्दति की आवश्यकता नहीं होती हैं। विज्ञान का अध्यापक विद्यार्थियों को वातावरण तथा परिस्थितिक पर्यावरण के प्रति जागरूक करके शांति से अवगत करा सकते हैं उन्हे इसकी हानि होने से मानव जीवन में किस प्रकार से बुरा परिणाम होगा इस से भी अवगत होते हैं। विज्ञान इस विषय के कई भाग हैं जिसके अनुसार,

- **जीव विज्ञान (Life Science) :–** पर्यावरण की रक्षा करने की जिम्मेदारी सभी देशों समाज और लोगों की एक समान हैं। जीव विज्ञान में में पेड़ों को हरा–भरा रखने से होने वाले फायदे, मौसम व वातावरण में होने वाला बदलाव, जमीन–पानी और वायु प्रदुषण, तेल के फैल जाने से समुद्र में होने वाला नुकसान, मछलियों को नुकसान, डॅम और बारूदी सुरंग से पर्यावरण को नुकसान, युध्द के दुष्पपरिणाम आदि के बारे में विद्यार्थियों को सीखाना चाहिए।
- **रसायन (Chemistry) :–** इस विज्ञान के माध्यम से वैज्ञानिक ज्ञान का उपयोग किया जाता हैं परंतु, विज्ञान की कुछ नीतियॉ होती हैं उसका पालन किया जाना अति–आवश्यक हैं, नहीं तो रसायन विज्ञान के कारण कई प्रकार की हानियों का सामना करना पडता हैं। आज हम इसके दुष्परिणाम से अच्छे तरह मे वाकिफ हैं।
- **भौतिक (Physics) :–** भौतिक विज्ञान के विद्यार्थियों को परमाणु के द्वारा होने वाले दुष्परिणाम तथा मानव के लिए यह कितना खतरनाक हैं इसकी जानकारी दी जानी चाहिए। न्युक्लियर युध्द इस पाठ के माध्यम से विद्यार्थियों को इसकी ताकत, उसका उपयोग तथा न्युक्लियर द्वारा संघर्ष को समाप्त करने के प्रति जागरूक करना चाहिए।

अ. 4) सामाजिक विज्ञान (Social Science) :– शांति शिक्षा को प्राकृतिक रूप से ही कक्षा में पढ़ाया जाना चाहिए। आज वर्तमान और भविष्य की दोनों ही पीढ़ी को हिंसा ना करने पर जोर देने वाली शिक्षा देना आवश्यक हेा गया हैं। जिस हेतु विद्यार्थियों को कर के सीखने पर जोर दिया जाना जरूरी हैं। सामाजिक विज्ञान

का प्रमुख उद्देश्य ही यह हैं कि, जिद्यार्थियों की सांस्कृतिक, सामाजिक, मानसिक तथा आर्थिक रूप से सक्षम बनाया जाये।

इतिहास (History)

सामाजिक विज्ञान के इतिहास इस विषय के माध्यम से विद्यार्थियों को विश्व शांति के बारें में बताया जा सकता हैं। इतिहास इस विषय के पाठयक्रम के माध्यम से युध्द से होने वाले लाभ तथा हानि दोनों के ही बारें में अच्छी तरह से समझाना जाना चाहिए। भूतकाल में घटित घटनाओं के बुरे परिणाम, जिसे आज तक हम लोग भोग रहें हैं, उन सब की जानकारी विस्तार से दी जानी चाहिए। विद्यार्थियों की इतिहास इस विषय के माध्यम से निम्नलिखित बातों को भी बताया जाना चाहिए :–

- विद्यार्थियों को भूतकाल तथा वर्तमान में घटित शांति से जुड़ी हुई गतिविधियों के बारें में बताकर यह समझाना जाना चाहिए कि, किस प्रकार से शांति का निर्माण किया जा सकता हैं।
- पाठ के द्वारा जिम्मेदारियों और अधिकार के बारे में पड़ाया जाना चाहिए ना कि, खुन–खराबें के बारें में ताकि संघर्ष का समाधान शांति से करना वे लोग सीख सकें।
- इस विषय द्वारा स्त्री पुरूष दोनों को समानता के अधिकार के बारें में सीखाया जायें, जिससे सामाजिक संघर्ष में कमी की जा सकती हैं
- इस विषय द्वारा मानव अधिकार के बारें में भी समझाया जाना जिसमें समानता, न्याय, सहिष्णुता आदि बातों पर अधिक जोर दिया जाना चाहिए।
- विद्यार्थियों को बताया जाना चाहिए कि किस प्रकार से संकृति विश्व में शांति लाने में सहयोग कर सकती हैं।

भूगोल (Geography)

भौगोलिक कौशल के द्वारा पर्यावरण तथा आर्थिक बातों से सामाजिक कल्याण किस तरह से प्रभावित होता हैं, इन बातों को समझने से पता चलता हैं कि, किस प्रकार से स्थानीय, देशीय तथा अंतराष्ट्रीय समस्याओं को किस तरह से शांतिपूर्वक हल किया जा सकता हैं। भौगोलिक पाठयक्रम में अकाल, भोजन वितरण, शरणार्थी, पर्यावरण प्रदूषण, प्राकृतिक स्त्रोत, आदि के बारें में सही–सही जानकारी दी जानी चाहिए। विद्यार्थियों को युध्द, हिंसा और संघर्ष इन तीनों की बातों के बारे में सही तरह से समझाया जाना चाहिए। सामाजिक विज्ञान के माध्यम से विद्यार्थियों में संघर्ष का समाधान करने के कौशल का निर्माण होने लगता हैं, उसी के साथ ही अंदरूनी मूल्यों का निर्माण, समझदारी, सहयोग आदि का भी निर्माण अपने आप ही होने लगता है।

अ. 5) कला और डिझाईन (Art and Design) :– कला और डिजाईन बनाना आदि की नई तकनीकों के माध्यम से विद्यार्थी कक्षा में ही सहयोग की भावना को सीख जाते हैं। कला में संघर्ष, मृत्यु, गुस्सा, सहयोग, शांति आदि से संबंधित डिजाईन बनाई जाती हैं। कला की कक्षा में विद्यार्थियों को हिंसात्मक चित्र व शांति के चिंत्रो को दिखाकर यह सीखाना चाहिए कि, किस प्रकार से विचार और भावनाओं को चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया जा सकता हैं। इस प्रकार विद्यार्थी शांति के लिए कार्य कर कसते हैं।

अ. 6) संगणक विज्ञान (Computer Science) :– आय.सी.टी.के माध्यम से हमनें सिर्फ दो देशों की दुरियों को ही नहीं दूर किया हैं बल्कि, हमने इसके माध्यम से दो देशों के बीच के विचारां को जाना हैं, और सभी देश अमन और शांति ही चाहते हैं। आय.टी.के माध्यम से विद्यार्थियों को इंटरनेट से सहयोग और समझदारी से भविष्य के प्रति सकारात्मक सोच का निर्माण हुआ हैं।

ब. अध्यापन पध्दति (Teaching Methods) :– स्कूल में पढ़ाते समय सभी अध्यापक यह बात अच्छी तरह से जानते हैं कि, हर विद्यार्थी की सीखने की क्षमता यह अलग –अलग होती हैं। यह बात उनकी दिमागी अवस्था औरीरिक रचना इत्यादी बातों से संबंधित होती हैं। इसलिए अध्यापक को अलग–अलग अध्यापन पध्दति का उपयोग कर इस तरह से पड़ाना चाहिए कि, ताकि वे उस विषय से प्रभावित हो सकें। कई प्रकार की अध्यापन तकनीकों में से कौन सी तकनीक? तथा इस प्रकार का ज्ञान जो विद्यार्थियों की आयु के अनुरूप हो? तथा किस विद्यार्थि पर कौन सी तकनीक अधिक उपयुक्त होगी? इन सब बातों पर खास ध्यान दिया जाना चाहिए।

शांति शिक्षा को विद्यार्थियों किस प्रकार से सीखाया जाये? इस बात से अधिक जरूरी बात यह हैं कि, विद्यार्थियों को क्या सीखाया जायें? विद्यार्थियों को जाति, धर्म से हटकर मानव अधिकार, शांति, खुशी और किस तरह से समस्या का समाधान करना चाहिए, यब बात सीखानी चाहिए। विद्यार्थियों को शांति की खोज भौतिक सुख सुविधाओं में न खोजकर अपने आंतरिक मन में खोजनी चाहिए, इस बात की शिक्षा पर अधिक जोर देना चाहिए। निम्नलिखित अध्यापन पध्दति के माध्यम से विद्यार्थियों को शांति शिक्षा की दी जा सकती हैं:–

- सहयोगी अधिगम द्वारा अध्यापन
- समुह चर्चा द्वारा अध्यापन
- समान अध्यापन
- दिमागी कसरत द्वारा अध्यापन
- वार्तालाप द्वारा अध्यापन
- क्रियाशील गतिविधियॉ द्वारा अध्यापन
- कहानी–कथन द्वारा अध्यापन
- प्रयोग पड़ताल द्वारा अध्यापन
- जॉच पड़ताल द्वारा अध्यापन और अध्ययन
- संवाद द्वारा अध्यापन
- कर्मचारी अध्यापन

क. पाठयक्रम सहभागी क्रियाएँ (Co-curricular Activities) :– पाठयक्रम सहभागी क्रियाएँ यह वह कार्यक्रम हैं, जो कक्षा के बाहर पाठयक्रम के अंतर्गत दी गई गतिविधियों के अनुसार ली जाती हैं। जिसका संबंध मूल्यों को सीखना और चरित्र का निर्माण करना हैं। पाठयक्रम सहभागी क्रियाओं द्वारा विद्यार्थी यों को भविष्य की शिक्षा दी जाती हैं। पाठयक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों को सिर्फ सैद्वांतिक ज्ञान से ही नहीं अवगत कराया जाता हैं, परंतु पाठयक्रम सहभागी क्रियाओं द्वारा अभ्यास द्वारा अभ्यास के माध्यम से उन्हें प्रात्यक्षिक ज्ञान दिया जाता हैं। विद्यार्थि यों को अगर हम प्रात्यक्षिक पध्दति द्वारा शिक्षा दी जाए तो वे अपनी कमजोरियों और क्षमताओं को अच्छी तरह से समझने लगते हैं। जिससे वे अपना सर्वांगीण विकास आसानी के कर पाते हैं। पाठयक्रम सहभागी क्रियाओं द्वारा विद्यार्थि समुह में कार्य करना सीखते हैं, उसी के साथ उनमें नेतृत्व करने की क्षमता तथा निर्णय लेने की भी क्षमता का विकास स्वयं होने लगता हैं।

पाठयक्रम सहभागी क्रियाओं द्वारा उन्हें इस प्रकार के अनुभव दिये जाते हैं जो विद्यार्थियों का भविष्य के लिए तैयार करते हैं तथा वर्तमान परिस्थितियों में अवगत कराते हैं। इन क्रियाओं द्वारा विद्यार्थियो कों सहिष्णुता, अंहिसा, सहयोग, शांति निर्णय क्षमता,

आदि कई मूल्यों को आत्मसाद कराया जा सकता हैं। उपरोक्त बातों को ध्यान में रखकर ही स्कुल में पाठयक्रम सहभागी क्रियाओं का आयोजन किया जाता हैं।

स्कूल में निम्नलिखित पाठयक्रम सहभागी क्रियाओं द्वारा को विद्यार्थियों में आत्मसाद करवाया जा सकता हैं

- स्कूल में सुबह की सभा द्वारा
- खेलकुद द्वारा
- वाद–विवाद द्वारा
- क्लब मे माध्यम से ली जानेवाली गतिवियों द्वारा
- एन.सी.सी. द्वारा
- एन.एस.एस. द्वारा
- गाईड द्वारा
- स्कॉट द्वारा
- सांस्कृतिक मिलाप द्वारा
- संगीत द्वारा
- नृत्य और नाटक द्वारा आदि..।

ड. कर्मचारियों का विकास (Staff Development)

कर्मचारियों का विकास किया जाना शांति शिक्षा को पाठयक्रम में एकीकरण करने हेतु अतिआवश्यक हैं। स्कुल का विकास यह सबसे ज्यादा कर्मचारियों के विकास पर ही आधारित होता हैं कारण, कर्मचारी वर्ग अगर अधिक उत्साही और तत्पर होगा, तो सारे काम समय पर और व्यवस्थित तरीकें से होगें। कर्मचारियों के विकास हेतु व्यक्तिगत और व्यवसायिक रिश्तों को अच्छा से बनाये रखना जरूरी हैं, ताकि अंतराष्ट्रीय समझ, लोकतंत्र तथा शांति को बनाये रखा जा सकें। इसके लिए संस्था का कार्य हैं कि, वह अपने कर्मचारियों को समय–समय पर प्रेरणा दें। इसी के साथ ही कर्मचारी अपने कार्य से संतुष्टि महसुस करें, ऐसा कार्य संस्था द्वारा किया जाना चाहिए। निम्नलिखित कार्यों द्वारा हम कर्मचारियों का विकास और अच्छी तरह से कर सकते हैं:–

- कर्मचारियों की समय–समय पर मीटींग लेना।
- कर्मचारियों हेतु कार्यशाला का आयोजन करना।
- कर्मचारियों को समय–समय पर ट्रेनिंग देना।
- कर्मचारियों हेतु शांति शिक्षा पर सेमिनार लेना।
- कर्मचारियों को प्रोत्साहन देने हेतु ट्रेनिंग।

च. कक्षा नियोजन (Classroom Management) :– कक्षा में कई प्रकार के धर्म और जाती के लोग एक साथ शिक्षा ग्रहण करने आते हैं, जिस कारण से शांति की संस्कृति को स्थापित किया जाना आवश्यक हैं। ताकि बड़े होने पर धर्म और जाति के नाम पर जो झगड़े होते हैं उन्हें बाल मन से साफ किया जा सकें। स्कुल एक ऐसा माध्यम हैं जहॉ पर विद्यार्थी अपना सबसे ज्यादा बितात हैं। स्कुल में ही विद्यार्थी घर के बाहर के संस्कार और मूल्यों को आत्मसाद करते हैं, इसलिए शांति कक्षा के माध्यम से वे अपने जीवन में आने वाले संघर्षों व समस्या का समाधान शांति से करना सीखते हैं तथा हिंसा के बदले अहिंसा को अपनाने पर अधिक जोर देते हैं। शांति शिक्षा के माध्यम से शिक्षक और विद्यार्थी के माध्यम सकारात्मक संबंधो का निर्माण किया जा सकता हैं।

शांति शिक्षा के माध्यम से शिक्षक, विद्यार्थीयों की कई प्रकार की समस्याओं का समाधान करते हैं। जैसे :– विद्यार्थियों की व्यवहार से संबंधित समस्या, शिक्षा से संबंधित समस्या, क्षमता से संबंधित समस्या, कौशल्यों से संबंधित समस्या, आदि...। शांति शिक्षा का स्कुल के विद्यार्थियों हेतु पाठयक्रम में समावेश करने के पीछे यहीं उध्देश्य हैं कि, वे अपने जीवन में अच्छा व्यवहार करना सीख सकें। विद्यार्थियों के भीतर अच्छे सदाचार, नीतियॉ, शिष्टाचार, अच्छे बुरे की समझ, समस्या का समाधान, सुनने और समझने की क्षमता का विकास करना, आदि कई बातों का विकास करना अध्यापक का प्रथम कर्तव्य हैं। कक्षा में शांति शिक्षा का नियोजन करने हेतु निम्नलिखित कार्य किया जाना चाहिए :–

कक्षा में शांति शिक्षा का नियोजन करने हेतु अनुशासन का पालन करना चाहिए।

कक्षा का वातावरण हमेशा आनंदपूर्ण रखना कारण इससे विद्यार्थियों का व्यवहार अच्छा रहता हैं।

- कक्षा में अच्छा कार्य करने वाले विद्यार्थियों को समय–समय पर प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।
- कक्षा में कम बुध्दिमान विद्यार्थियों को समय–समय पर प्रेरणा देने का कार्या शिक्षक द्वारा किजा जाना चाहिए।
- विद्यार्थी किसी भी समस्या का समाधान बिना किसी भेदभाव के करें, ऐसी शिक्षा दी जानी चाहिए।
- समस्या पैदा ही ना हो ऐसा कार्य करें, इसकी शिक्षा विद्यार्थियों को दी जानी चाहिए।

छ. शालेय नियोजन (School Management)

शांति शिक्षा को सुचारू रूप से स्थापित करने हेतु पाठयक्रम के साथ ही स्कुल में शांति शिक्षा का नियोजन किया जाना अति आवश्यक हैं। इसके लिए संस्थापक का प्रमुख कार्य हैं कि, वे इसकी स्थापना हेतु स्वयं भी अपनी ओर से शांति शिक्षा के लिए कार्य करें । इसके लिए सर्वप्रथम स्कुल, कॉलेज का वातावरण यह लोकतांत्रिक सिध्दांतों पर आधारित होना चाहिए। इसके लिए अनेक पध्दतियों और उनका क्रियान्वयन किया जाना अति आवश्यक हैं। इसके लिए निम्नलिखित बातों को लागु किया जाना चाहिए

- अच्छे वातावरण हेतु सकारात्मक भाषा और वाणी का पालन किया जाना चाहिए।
- विद्यार्थी केंद्रित शिक्षा पर जोर दिया जाना चाहिए।
- विद्यार्थियों के आत्मविश्वास को बढ़ावा देना ।
- विद्यार्थियों को गलती होने पर सजा भी दी जानी चाहिए परंतु वह अधिक कठोर ना हो।
- स्कुल के वातावरण को स्वस्थ रखने हेतु सभी ने मिलकर करना चाहिए

इस प्रकार से उपरोंक्त सभी 6 बातों का पाठयक्रम में एकीकरण करने के 6 प्रमुख माध्यम को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया हैं। जिसमें अ. विषय संदर्भ ब. अध्यापन पध्दतियॉ क. पाठयक्रम सहभागी क्रियाएँ ड. कर्मचारियों का विकास च. कक्षा नियोजन छ. स्कुल नियोजन इन 6 प्रमुख माध्यमों के द्वारा शांति शिक्षा को आसानी से आत्मसाद किया जा सकता हैं। अगर इन 6 माध्यमों को ईनामदारी से निभाया जाये तो शांति को स्थायी रूप से स्थापित किया जा सकता हैं।

विदयार्थियों में अवांछनीय व्यवहार में परिवर्तन के लिए

1. बालक में नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों के विकास के लिए।
2. आदर्श व्यक्तित्व निर्माण व सर्वांगीण विकास के लिए।
3. सहअस्तित्व की भावना के विकास के लिए।

शांति शिक्षा की व्यवस्था दो प्रकार से की जा सकती हैं :–

1. सैध्दान्तिक :– शांति शिक्षा हेतु पाठयक्रम में नैतिक शिक्षा, मूल्य शिक्षा, पर्यावरण शिक्षा आदि इन विषयों का महत्व को प्रतिस्थापित करते हुए छात्रों को इसका महत्व, स्वयं शिक्षक की रुचि व एक नैतिक जिम्मेदारी मानते हुए समझाएँ।

2. व्यावहारिक

1. साहित्यिक कार्यक्रम :– निबंध, वाद–विवाद, भाषण, स्लोगन आदि।
2. सांस्कृतिक कार्यक्रम :– नाटक, कहानी, नृत्य, कविता, एकांकी, प्रभात–फेरी, फिल्म।
3. शांति चित्र, पोस्टर, प्रदर्शनी आदि।
4. विश्व शांति दिन का आयोजन।
5. सर्वधर्म प्रार्थना स्थल।
6. शांति विषयक वार्ता, सेमिनार व कार्यशालाओं का आयोजन।
7. प्रकृतिक स्थलों का भ्रमण।
8. योग शिबिरों का आयोजन।
9. शांति पुरस्कारों का आयोजन।
10. मौन का अभ्यास।
11. अन्य क्रियाएँ :– शांति गीत, शांति पेंटिंग, शांति के ऊपर लिखना व बोलना।

शांति शिक्षा का उद्देश्य विदयार्थी की नींव को मूल्यवान बनाकर मजबूत बनाना हैं जिससे मानवीय आदर्शों, गुणों व व्यवहारों के प्रतिमानों के अनुसार व्यवहार कर छात्र सकारात्मक दृष्टीकोण का विकास कर सकें। आने वाले भारत की नींव को सुदृढ आधार प्रदान करने के लिऐ शांति शिक्षा ऐसा विकल्प हैं जिससे आने वाली पिढी को इतिहास पटल पर सुशोभित किया जा सकता है। अतः विदयार्थियों में शांति शिक्षा हेतु विभिन्न पाठयक्रम व पाठय–सहभागी क्रियाओं का आयोजन किया जा सकता हैं जो निम्नानुसार हैंः–

1. कक्षा के विभिन्न स्तरों को शांति शिक्षा का पाठयक्रम अनिवार्य करना।
2. शांति शिक्षा से संबंधित सत्रीय कार्य का मूल्यांकन में स्थान देना।
3. राष्ट्रीय पर्वो का आयोजन।
4. कक्षाओं का आदर्श नामकरण।
5. महाविदयालय की सामग्री पर आदर्श लेखन।
6. प्रातः कालीन आदर्श गायन।
7. कक्षा में आदर्श कॉर्नर।
8. खेल–कुद का आयोजन।
9. विभिन्न प्रदर्शनियों व भित्ति पत्रिका का आयोजन।
10. विभिन्न वाद–विवाद व संगोष्टियो का आयोजन।
11. निबंध व चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन।
12. राष्ट्रिय स्तर पर शांति रैली का आयोजन आदि।

शांति शिक्षा के क्षेत्र (Scope of Peace Education)

शांति शिक्षा का विस्तार विभिन्न स्तर पर किया जा सकता हैं :–

1. व्यक्तिगत तथा स्वयं–समृध्दी स्तर
2. स्कूल तथा सामुदायिक स्तर
3. राष्ट्रीय स्तर
4. विश्वव्यापी स्तर

1. व्यक्तिगत तथा स्वयं–समृध्दी स्तर :– बच्चों के विका की प्रक्रिया की शुरुवात यह घर से अपने परिवार के मध्य रहकर होती हैं। उनके मूल्यों के विकास हेतु परिवार के सदस्य कई प्रकार की क्रिया व प्रक्रियाओं का उपयोग करते हैं। जैसे–कई प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन (जन्मदिन, त्यौहार, रीति–रिवाज, आदि) करते हैं। इन सब के माध्यम से बालकों में वे कई प्रक्रियांओं के मूल्यों को ग्रहण करने का अवसर प्रदान करते हैं, इससे उनमें कई प्रकार के गुणों व कौशलों का विकास अपने आप होते जाता हैं। इसलिए व्यक्तिगत अर्थात स्वयं के सर्वांगीण विकास हेतु परिवार का कर्तव्य हैं कि, वे बच्चों के समक्ष आदर्श व्यवहार तथा वातावरण का निर्माण कर उसें बनायें रखें। इन सब हेतु सब से महत्वपूर्ण बात जो बच्चों को एक आदर्श व्यक्तित्व निर्माण हेतु चाहिए वह हैं सकारात्मक आत्मसम्मान। शांतिपूर्वक जीवन जीने हेतु स्वयं में कई कौशलों को अपनाना पडता है। जैसे–सकारात्मक विचार, निर्णय क्षमता, दृढ निश्चय, सहानुभूतिपूर्वक सुनना, आपसी बातचीत में अपनापन, आत्मविश्वास, आलोचनात्मक विचार प्रक्रिया आदि। इन सब मूल्यों के विकास में शांति शिक्षा कई महत्वपूर्ण कार्य कर रही हैं।

2. स्कूल तथा सामुदायिक स्तर :– स्कूल में प्रवेश से पहले ही बालकों में कई प्रकार के मूल्यों व कौशाल का विकास परिवार के माध्यम से हो चुका होता हैं, परंतु फिर भी बालकों के सर्वांगीण विकास हेतु स्कुल द्वारा भी कई प्रकार के प्रयास किये जाने चाहिए। स्कूलों में शांतमय वातावरण की सबेस ज्यादा जरुरत हैं। शांति की संस्कृति को अनाकर, सहयोग, सहकार्य, स्वयं व दुसरा की प्रशंसा, भरोसा, ईमानदारी इन मूल्यों को अपनाया जा सकता हैं। शांति की संस्कृति के द्वारा अपनी अभिवृत्ती में बदलाव लाकर अपने व्यवहार को भी बदला जा सकता हैं। इसके लिए विदयार्थी –शिक्षक के मध्य आदर व दोंस्ती दोनों को ही बराबर से अपनाने से इनके संबंधो को अधिक मजबूत किया जा सकता हैं। इससे शांति की संस्कृति को स्कूल में अपने आप पनपने का मौका मिलेगा।

अध्यापक पढाते समय अगर रुचिपूर्ण अध्यापन पध्दति का उपयोग करेंगे और उसी के साथ ही प्रत्यक्ष स्वयं के व्यवहार के द्वारा भी अगर वे शांति को विदयार्थियों से अवगत करायेंगे तो आसानी से शांति को स्कूल व विदयार्थियों में स्थापित किया जा सकता हैं। अध्यापक एक माध्यम हैं शांति को बढाने का। वह अपने व्यवहार, अध्यापन, प्रत्यक्ष कार्य व अध्यापन की शांतप्रिय पध्दति को अपनाकर स्कूल में शांतिपूर्वक सामंजस्य का निर्माण कर सकते हैं। यहीं बालक अपने दोस्तों, शिक्षकों, संस्थापक व बाकि सभी लोगों के साथ सामंजस्य के साथ रहना सीख जाता हैं। विदयार्थी मूलतः अनुकरणीय होता हैं और अपनी इसी आदत के कारण समजार में भी अच्छे से रहना सीख जाता हैं। विदयार्थी यह समाज का ही एक हिस्सा होता हैं। जिससे सामुदायिक स्तर पर भी उसका विकास होना शुरु हो जाता हैं कारण बडा होकर उसे इन्हीं में शामिल होकर अपनी एक अलग पहचान बनानी होती हैं।

3. राष्ट्रीय स्तर :– राष्ट्रीय एकता को स्थापित करने में शिक्षा का बहुत ज्यादा योगदान हैं। वर्तमान समय में सामाजिक, राजनितीक और आर्थिक मुद्दों की समझ रखकर शिक्षा देना जरुरी हो गया हैं। विदयार्थी यह देश का भविष्य हैं जिस कारण उसमें समाज में व्याप्त समस्याओं की सच्चाई को जानकर एक स्वच्छ व अच्छे समाज के निर्माण करने में अपना संपूर्ण योगदान देना चाहिए। जिस हेतु हमें निम्नलिखित कार्य किए जानें चाहिऐः–

1. सामंजस्य को बढावा देना। सभी धर्मो का सम्मान करना व किसी भी प्रकार का भेदभाव न करना।

2. औरतों की गरिमा को बनाये रखना।
3. अपनी संस्कृती के अच्छे मूल्य व रीति–रिवाज को महत्व देना।
4. पर्यावरण व प्रकृति की रक्षा करना।
5. राष्ट्रीय संपत्ति की सुरक्षा का ध्यान रखना।
6. हिंसा को खत्म करने का प्रयास करना।
7. अहिंसा को अपनाकर उसका प्रचार करना।

4. विश्वव्यापी स्तर :– शिक्षा का सबसे प्रमुख व महत्वपूर्ण कार्य हैं, व्यक्ति का विश्वव्यापी स्तर पर उसका सर्वांगीण विकास करना। कोई भी देश अकेले कई समय तक अपनी प्रगती नहीं कर सकता हैं और ना ही पृथक रहकर ज्यादा समृध्दि हो सकता हैं। आज सभी को अपने दृष्टीकोण का विस्तार करने की आवश्यकता हैं। विदयार्थियों में वर्तमान मुद्दों पर वाद–विवाद, भाषण, संवाद तथा निबंध द्वारा विश्वव्यापी जागरुकता लाई जा सकती हैं। कुछ मुद्दें निम्नलिखीत हैं :–

1. जनसंख्या
2. लिंगभेद
3. युध्द
4. आतंकवाद
5. विश्वव्यापी संस्कृति
6. मानव अधिकार
7. सामुदायिकता
8. पर्यावरण की सुरक्षा
9. जानवरों की सुरक्षा
10. बेरोजगारी
11. आधुनिकता
12. मानवीय मूल्य
13. संस्कार
14. असमानता
15. भ्रष्टाचार आदि ।

निष्कर्ष

मानव जीवन का अंतिम लक्ष्य ही शांति की प्राप्ति हैं। रोटी –कपडा–मकान आज यह सारी जरुरतें काफी हद तक पुरी हो गई है, और हवा–पानी के बाद सबसे बडी जरुरत के रुप में शांति को माना जा रहा हैं। निष्कर्ष रुप से कहॉ जा सकता हैं कि, शांति शिक्षा वर्तमान समय की सबसे जरुरी आवश्यकता के रुप में देखा जा रहा हैं। जिस हेतु शांति शिक्षा का पाठयक्रम में सम्मिलित किया जाना आवश्यक हैं। प्रस्तुत लेख में शांति शिक्षा को किस प्रकार से पाठयक्रम में आसानी से जोड़ा जा सकता हैं इसे स्पष्ट किया गया हैं उसी के साथ ही शांति शिक्षा को किस प्रकार से पाठयक्रम में सम्मिलित किया जाना चाहिए इस हेतु आवश्यक सभी पहलुओं को स्पष्ट करने की पुरी कोशिश की गई हैं।

संदर्भ

1. Aggrwal JC. Development and Planning of Modern Education, 1990.
2. Bartlett. Teaching Teachers to Teach Peace: A Reflective Pre-Service case study, 2014.
3. Bernard, Richard. My ultimate Conflict and Peacemaking Resolution, 2008.
4. Charles, Selvi. Peace and Value Education. Hyderabad: Neelkamal Publication, 2012.
5. Loknath Mishra. Peace Education Framework for Teachers. New Delhi: A.P.H.Publishing Corporation, 2009.
6. अनेजा, (1986), शान्तिपर्व में नैतिक मूल्य। दिल्लीःकादम्बरी प्रकाशन।
7. भोसले, डोणे (2009), शिक्षणातील बदलते विचार प्रवाह. कोल्हापुरः फडके प्रकाशन.
8. जगताप (2006, 2008), शिक्षणातील नवप्रवाह व नवप्रवर्तने पुणेः नित्य नुतन प्रकाशन.
9. www.peace.ca/foundation.html
10. www.peace.uit.no
11. www.worldpeacenewsletter.html
12. www.haguepeace.org
13. www.wiscomp.org/peaceprients.html
14. www.upeace.org
15. www.unicef.org
16. www.noviolenceinternational.net
17. www.seedsofpeace.org
18. www.eric.ed.gov